

## अब खत भी नहीं आते सदा भी नहीं आती

अब खत भी नहीं आते,  
सदा भी नहीं आती,,,,,,,,,  
क्या ग़ाद मेरी उनको,  
ज़रा भी नहीं आती

बिमर मुहाबत को,  
गज़ा भी नहीं आती  
कुछ काम बकीरों की  
दुआ भी नहीं आती

शीशे की तरह तोड़ ही  
देते हैं दिलों को  
ये कैसा सितमगर है  
दया भी नहीं आती

क्यों होते हो बेचैन,  
मेरे दिल को दुखा के,  
क्या तुमको मनाने की  
आधा भी नहीं आती

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/18447/title/ab-khat-bhi-nahin-aate-sada-bhi-nahin-aati>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |